क्लास 25-2-68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। तुम्हारे टीचर बैठ कर बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं कि परमपिता परमात्मा पिता भी है तो टीचर भी है। ऐसा पढ़ाते हैं तो और कोई पढ़ा न सके। तुम कहते हो शिव बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाबा कोई एक का नहीं है, बाबा तो सभी का है ना। सभी को पढ़ा रहे हैं। एक पढ़ाई है स्थूल, दूसरी है गुप्त। मनमनाभव-मध्याजीभव। उनका अर्थ समझाते हैं मुझे याद करो। बच्चे तो अभी समझदार हुये हैं। बेहद का बाप कहते हैं तुम्हारा वर्सा तो है ही। यह कब भूलना न चाहिए। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। अभी तुम जीवात्मायें हो ना। बेहद का बाप भी निराकार है। तुम जानते हो इस तन द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। और कोई के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं तो कहेंगे लौकिक टीचर लौकिक बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पारलौकिक टीचर पारलौकिक बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम भी पारलौकिक मूल वतन के वासी हो। बाप भी परलोक में रहते हैं। बाप कहते हैं मैं शान्तिधाम का निवासी हूं। तुम भी वहां के निवासी हो। हम दोनो एक ही धाम के निवासी हैं। तुम अपने को आत्मा समझो। हम भी परम-आत्मा हैं। अभी तुम यहां पार्ट बजा रहे हो। पार्ट बजाते तुम्हीं पतित बन गये हो। यह सारा बेहद का भाण्डा है जिसमें यह खेल होता है। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो कि यह बेहद का खेल है। इसमें दिन और रात भी होते हैं। सूर्य और चान्द कितने बड़े बेहद की वस्तुयें हैं। यह है ही बेहद की बात। अभी तुमको ज्ञान है। रचता ही आकर रचता और रचना के का परिचय देते हैं। बाप कहते हैं हम तुमको रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ सुनाने आया हूं। यह पाठशाला है। पढ़ाने वाला अभोक्ता है। ऐसे और कोई नहीं कहेंगे कि हम अभोक्ता हैं। अहमदाबाद में एक साधू कहता था परन्तु उसकी ठगी पकड़ी गई। इस समय तो ठगी भी बहुत निकल पड़ी है। वेष धारी बहुत हैं। इनका तो कोई वेष है नहीं। मनुष्य समझते हैं कृष्ण ने गीता सुनाई तो आजकल कितने कृष्ण बन पड़े हैं। अभी इतने कृष्ण तो होते नहीं। यहां तो शिव बाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। आत्माओं को सुनाते हैं। तुमको बार2 कहा गया है अपनको समझ आत्मा (भाई) को सुनाओ। बाबा की नालेज हम आत्माओं को सुनाते हैं। मेल अथवा फिमेल दोनो भाई हैं। ब्रदर्स हैं। इसलिए बाप कहते हैं तुम सब मेरे वर्से के हकदार हो। वैसे फिमेल को वर्सा नहीं मिलता है। क्योंकि उनको तो ससुराल घर जाना पड़ता है। यहां तो सभी हैं ही आत्मायें। अशरीरी ही होकर जाना है घर। अभी ही तुमको ज्ञान-रत्न मिलते हैं, यह अविनाशी रत्न बन जाते हैं। आत्मा ही ज्ञान का सागर बनती है ना। आत्मा ही सब कुछ करती है, परन्तु मनुष्यों को देहाभिमान होने कारण देही-अभिमानी बनते नहीं हैं। अभी तुमको देही-अभिमानी बनकर एक बाप को याद करना है। कुछ तो मेहनत चाहिए ना। लौकिक गुरु को कितना याद करते हैं। मूर्ति रख देते हैं। अभी कहां शिव का चित्र कहां मनुष्य का चित्र। रात-दिन का फर्क है। वह गुरु का पटो पहन लेती हैं। पति लोग को अच्छा नहीं लगता है कि दूसरे का पटो पहने। हां शिव का पहनेंगे तो वह सब को अच्छा लगेगा। क्योंकि वह तो परमपिता परमात्मा है ना। उनका चित्र तो होना चाहिए। यह है गले का हार बनाने वाला। तुम रुद्र माला के मोती बनेंगे ना। यूं तो सारी दुनिया रुद्र माला भी है, प्रजापिता ब्रह्मा की भी माला है। ऊपर में सिजरा तो है ना। बड़े होते हैं हद के सिजरे, यह है बेहद की बात। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी की माला है। आत्मा कितनी छोटी से छोटी बिन्दी है। बिलकुल छोटी बिन्दी है। ऐसे2 गिनती गिनते जाओ अनगिनत हो जायेंगे। गिनती करते2 ही तुम थक जायेंगे। बुद्धि यह ठहर सकता है। बराबर यह आत्माओं का झाड़ कितना छोटा होगा। ब्रह्म के बहुत थोड़ी जगह में रहते हैं। वह फिर यहां आते हैं पार्ट बजाने तो फिर यहां कितनी लम्बी-चौड़ी दुनिया है। कहां2 एरोपलेन में जाते हैं। वहां तो एरोपलेन आदि की दरकार ही नहीं। आत्माओं का छोटा सा झाड़ है। यहां मनुष्यों का कितना बड़ा झाड़ है। यह सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। जिसको कोई एडम आदी देव कहते हैं। गुल-फिशेल तो जरूर है। यह तुम्हारा है ही प्रवृत्ति मार्ग। निवृत्ति मार्ग का खेल होता नहीं। एक हाथ से क्या होगा। दोनो पैते चाहिए ना। दो हैं तो दोनो हैं

आपस में रेस करते हैं। दूसरा पिता साथ न देता तो ढीले पड़ जाते हैं। परन्तु एक के कारण ठहर थोड़े ही जाना बाहिर। यह तो है प्रवृति-मार्ग। पहले2 पवित्र-प्रवृति-मार्ग फिर होता है अपवित्र। अभी तो यह पतित भ्रष्टाचारी दुनिया है। कहते भी हैं, परन्तु ब्राह्मी रीति समझते नहीं है। बरोबर पहले2 इन ल0ना0 का राज्य था पवित्र प्रवृति-मार्ग था। फिर बाद में यह निवृति मार्ग वाले हठयोगी हठयोग आद सिखलाते हैं। उन से कोई की गति सद्गति नहीं होती। कगरते ही जाते हैं। तुम्हारी बुधि में है यह झाड़ कैसे बढ़ता है। कैसे एड होते जाते हैं। ऐसा झाड़ कोई निकाल न सके। कोई की बुध में रचना की तो आदिमध्य अन्त का नालेज है नहीं। इसलिए बाबा ने यह भी कहा था यह भी लिखो हम ने रचता द्वारा रचना और रचना के आदि, मध्य, अन्त का नालेज पाया हम समझा सकते हैं। वह न तो रचता और न रचना को ही जानते हैं। अगर परमपरा यह ज्ञान चला आता तो बताते ना। सिवाय तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियों और कोई बता न सके। तुम जानते हो हम ब्राह्मणों को ही ते परमात्मा पढ़ाते हैं। हम ब्राह्मणों का ही उत्तम ऊंच, ऊंच धर्म है। चित्र भी जरूर दिखाना पड़े। चित्र बिगर किसकी बुधि में बैठेगा नहीं। चित्र बहुत बड़ी होनी चाहिए। विराट धर्मों का झाड़ कैसे बढ़ता है। यह भी समझाया है आगे तो कहते थे हम आत्मा सो परमात्मा परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप ने उनका भी अर्थ बताया है। इस समय हम सभी ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे नई दुनिया में। अभी हम पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं। अर्थात यह है पुरुषोत्तम बनने का संगम युग। यह सब तुम ही समझा सकते हो। रचता और रचना का अर्थ, ओम का अर्थ, हम सो का अर्थ। ओम माना हम आत्मा है फर्स्ट। फिर यह शरीर है। आत्मा अविनाशी-शरीर विनाशी। हम यह शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं। इसको कहा जाता है आत्माभिमानी। हम आत्मा ने यह फ्लाना नाम डाला है। हम आत्मा फ्लाना पार्ट बजा रहे हैं। हम आत्मा यह करते हैं। हम आत्मा परमात्मा के बच्चे हैं। कितना वन्डर-फुल ज्ञान है। यह ज्ञान बाप में ही है इसलिए बाप को बुलाते हैं। बाप है ज्ञान का सागर। उनके बीच में फिर है अज्ञान का सागर भक्ति-मार्ग के गुरुलोग। घोर अंधियारा हो जाता है। फिर जब बाप आते हैं तो घोर अंधेरा हो जाता है। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है अज्ञान। अज्ञान भक्ति-मार्ग को कहा जाता है। यह भी समझते नहीं है कि ज्ञान का पता ही नहीं है। ज्ञान कहा ही जाता है रचता द्वारा रचना को जानना। तो जरूर रचता में ही ज्ञान है ना। इसलिए उनको क्रियटर कहा जाता है। मनुष्य समझते क्रियटर ने रचना रची है। बाप समझाते हैं यह तो अनादी बना बनाया खेल है। हमको बुलाते ही हैं हे पतित-पावन तो सभी पतित हैं ना। यह सृष्टि ही पतित है। मुझे बुलाते भी हैं पतित सृष्टि में कि आकर पावन बनाओ। तो रचता कैसे कहेंगे। रचता तब कहें जब कि प्रलय हो जावे फिर रचे। बाप तो पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। जो यह सारा विश्व का झाड़ है उनके आदि, मध्य, अन्त को तुम मीठे2 बच्चे ही जानते हो। जैसे माली लोग हरेक बीज और झाड़ को जानते हैं ना। बीज को देखने से सारा झाड़ बुधि में आ जाता है। यह है हेयुमन्टी का बीज। उनको कोई नहीं जानते हैं। गाते भी हैं परमपिता परमात्मा मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है निराकार है। सत्-चित, आनन्द स्वरूप है, सुख-शान्ति पवित्रता का सागर है। तुम जानते हो सारा ज्ञान परमपिता परमात्मा इस शरीर द्वारा ही दे रहे हैं। आत्मा ही शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। बाप को करन-करावनहार पतित-पावन भी कहते हैं। तो जरूर यहां आवेंगे ना। पतितों को पावन को ई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। जरूर यहां आना पड़े। वहां सब को प्युर बना कर ले जाते हैं। वह बाप ही तुम बच्चों को पाठ पढ़ा रहे हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरुषोत्तम संगम युग किसको कहा जाता है इस पर भी तुम भाषण कर सकते हो। भ्रष्ट, कनिष्ट तमोप्रधान से श्रेष्ठ सतोप्रधान बनते हैं। तुम्हारे पास तो टापिक बहुत ही हैं। यह कलियुगी तमोप्रधान दुनिया सतोप्रधान पावन कैसे बनती है यह भी समझाने लायक है। परन्तु बन्दर बुधि कुछ भी समझते नहीं। आगे [illegible] बनते रहेंगे। छोड़ देंगे फिर आवेंगे। गीता सद्गति की हैंडी एक ही है। तुम कह सकते हो सब

का सदगति दाता एक ही परमपिता परमात्मा शिव है। उनको ही श्री2 कहते हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमपिता परमात्मा। वह वैठ श्रेष्ठ बनाते हैं। श्रेष्ठ है सदगति। भ्रष्ट है कलियुग। कहते भी हैं भ्रष्टाचारी है। परन्तु अपन को नहीं समझते हैं। पतित दुनिया में एक भी श्रेष्ठ नहीं। श्री-श्री जब आवे तब ही श्री बनावें। श्री2 का टाईटल जो है जो आद को सतयुग में था सो अन्त में आकर इन कलियुगी गवर्मेन्ट ने लिया है। यहां तो मुसलमान आद सब को श्री2 कहते हैं। श्री अक्षर है ही पवित्रता का। दूसरे धर्म वाले अपन को श्री श्री नहीं कहते हैं। श्री पोप कहेंगे क्या। यहां तो सभी को कहते रहते। अर्थ कुछ भी नही जानते हैं। हंस मोती चुगने वाले बगुले गन्द खाने वाले फर्क तो है ना। यह देवतायें हैं फूल। यहां तो सभी हैं कांटे। वह है गार्डन ऑफ अल्ला। बाप तुमको फूल बनारहे हैं। बाकी फिर फूलों में है वैराईटी। सब से अच्छा फूल होता है किंग ऑफ फ्लावर्स। इन ल0ना0 को नई दुनिया के किंग-क्वीन फ्लावर्स कहेंगे। तो तुम बच्चों को आन्तरीक खुशी होनी चाहिए। इसमें बाहर से कुछ करना नही होता है। यह बत्तियां आद जलानेका भी अर्थ चाहिए ना। शिवजयन्ति पर जलाना चाहिए। न कि दीवाली पर। दीवालीपर लक्ष्मी को आवाहन करते हैं। उन से पैसा मांगते हैं। जब कि भण्डारा भरने वाला तो शिव भोला भण्डारी ही है। लक्ष्मी क्या भण्डारा भरेगी। तुम जानते हो शिव बाबा द्वारा हमारा अखुट खजाना भर जाता है। यह ज्ञान रत्न दिन है ना। वहां भी तुम्हारे पास अथाह धन रहता है। नईदुनिया में तुम मालामाल हो जावेंगे। बुधि से समझते हैं सतयुग में ढेर के ढेर हीरे-जवाहर थे। फिर वही होंगे। मनुष्य भुंजते हैं वह चीजें खत्म हो जावेंगे फिर कहां से आवेंगे। खानियां खाली हो गईपहाड़िया आद टूट गये फिर कैसे होंगे। वाली हिस्ट्री रिपीट होती है। जो कुछ था, सो फिर होगा। तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो स्वर्ग का मालिक बनने। स्वर्ग की हिस्ट्री जागरफी फिर रिपीट होगी। गीत में भी है बाबा आप ने तो सारी सृष्टि, सारा समुद्र सारी पृथ्वी हमको दे दी। कोई भी छीन नहीं सकता। उसके भेट में अभी क्या है। एक दो में ज़मीन के लिए, पानी लिए, भाषा के लिए लड़ते रहते हैं।

स्वर्ग का रचता बाप का जन्म दिन मनाया जाता है। जरूर उसने स्वर्ग की बादशाही दी होगी। अभी तुमको बाप पढ़ा रहे हैं। यहां तुमको शारीरिक नाम-रूप से न्यारा हो अपन को आत्मा समझना है। पवित्र बनना है या तो योगबल से या तो सज़ा खाकर। फिर पद भी कम हो जाता है। स्टुडन्ट की बुधि में रहता है ना हम इतने मार्क्स से पास होते हैं। टीचर ने इतना पढ़ाया। फिर टीचर को भी सौगात दे देते हैं। यह तो बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो तुम फिर भक्ति-मार्ग में उनको याद करते रहते हो। बाकी बाबा सौगात आद क्या करेंगे। वह तो अभोक्ता है ना। हम उनको क्या सौगात देंगे। वहां तो उनको याद भी नहीं करेंगे। बाप कहते हैं मुझे मैं तुमको विश्व की बादशाही देता हूं। मेरी आखिर में क्या आवेगा। यहां तो जो भी आया कुछ भी नहीं है। यह पुरानी छी2 डर्टी दुनिया है। तब तो मुझे बुलाते हैं। तुम हमारा इतना अपकार करते आये हो। हम फिर भी उपकार करते हैं। पतित से पावन बनाते हैं। बेहद का बाप है ना। इस खेल को याद करना चाहिए। मेरे में रचना के आदि-मध्य, अन्त का ज्ञान है। जो तुमको सुनाता हूं। तुम अभी सुनते हो फिर भूल जावेंगे। 5000 वर्ष बाद फिर चक्र पूरा होगा। तुम्हारा पार्ट कितनाबलवली है। तुम सतोप्रधान लक्ष्मी बनते हो फिर तमोप्रधान भी बनते हो। तुम ही बुलाते हो बाबा आओ। टीचर है तो उनी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। गफ्लत न करनी चाहिए। कई बच्चे मतभेद में आकर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। श्रीमत पर न चलेंगे पढ़ेंगे ही नहीं तो नापास भी तुम होंगे। यह बेहद का होता है। बाप कहते हैं अपन पर रहम करो। हेल्प को पढ़कर अपन को राजतिलक देना है। बाप को तो है पढ़ाने की डियुटी। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं। फिर तो सभी पर करनी पड़े। वह कृपा आद भक्ति मार्ग में मांगते हैं। यहां वह बात नहीं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप-दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप रूहानी बच्चों प्रति नमस्ते।

*-: : ******: : ओमशान्ति: : ******: : -*